B-2
L-11
Ancient
India

वैदिक संस्कृति

ऋग्वैदिक राजनीतिक जीवन :

* ऋग्वेद में राजन् शब्द का उपयोग किया गया है न कि राजा का

समिति
(सामान्य लोगों की प्रतिनिधि संस्था)

↓ चयन

नेतृत्व, रक्षा, भरण-पोषण (राजा)

↓ सहायक

सूतकार (सारथी) | ग्रामणी | रथकार | कर्मकार

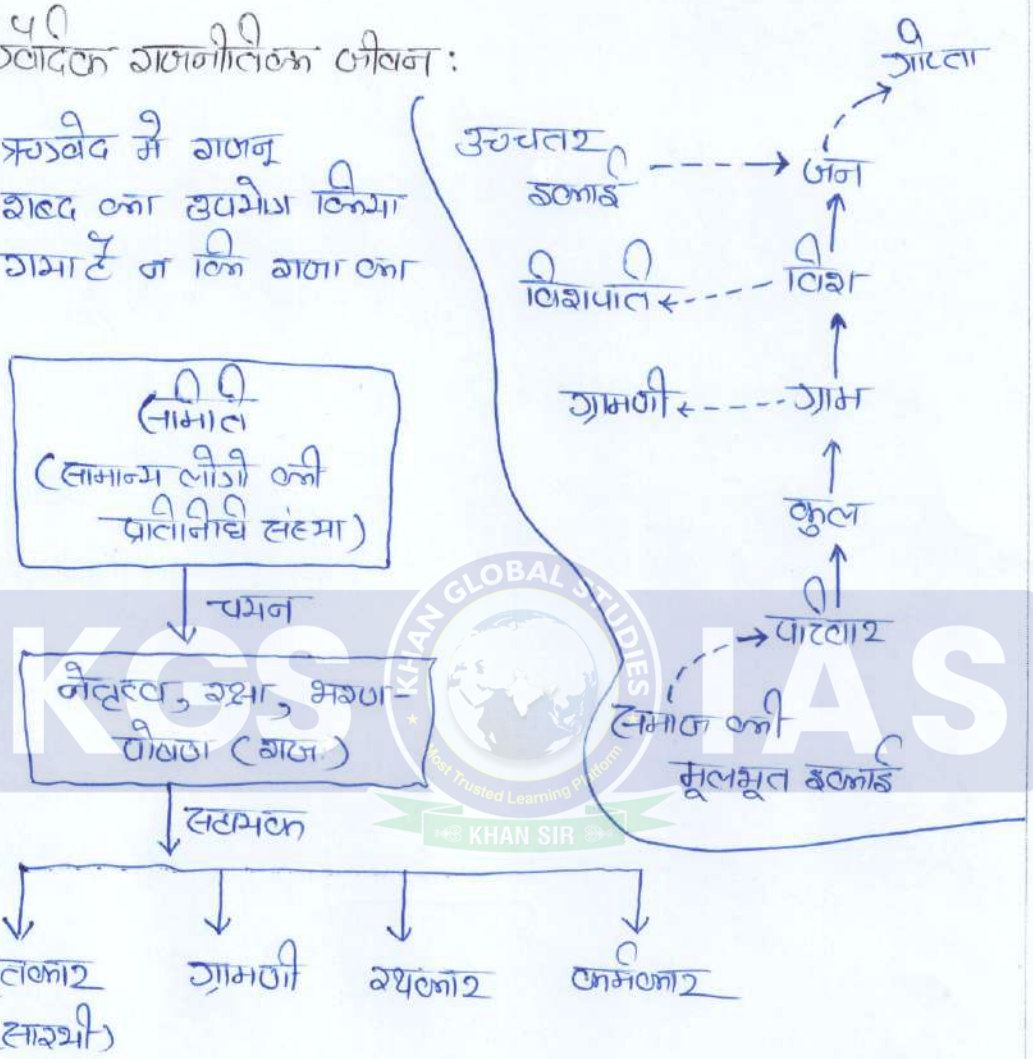

गोप ← जन ← उच्चतर इकाई

विशपति ← विश

ग्रामणी ← ग्राम

कुल

परिवार ← समाज की मूलभूत इकाई

(परिवार → कुल → ग्राम → विश → जन)

* ऋग्वेद में एक और अधिकारी दूतार (दूत) का उल्लेख है।
* ऋग्वेद में स्पश शब्द का उल्लेख है
  → गुप्तचर व्यवस्था

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* राजन् की सहायता के लिए 4 संस्थाए थी
① विदथ - ऋग्वेद में 122 बार उल्लेख + सबसे प्राचीन संस्था
② गण - " " 46 " "
③ सभा - " " 8 " " + प्रमुखः सभापति
④ समिति - " " 9 " "
→ अथर्ववेद मे इन दोनो को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

* सभा के लिए किल्वत् स्पद शब्द का प्रयोग किया गया।

* राजा भूमि का स्वामी नही था किंतु वह युद्ध का स्वामी था।
* ऋग्वैदिक काल में नियमित सेना नही थी किंतु इसका अर्थ यह नही कि लड़ने वाले लोग नही थे। शर्ध और व्रात जैसे शब्द युद्ध में लड़ने वालो के लिए मिलते है।

* दशराज्ञ युद्धः
→ ऋग्वेद के 7वें मण्डल में उल्लेख
→ परूष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया
→ इसमें भरत वंश के राजा सुदास ने दस राजाओ के एक संघ को हराया। इस संघ में आर्यों के प्रमुख प्रमुख जन (अनु, द्रुहु, यदु, पुरू, तुर्वसु) तथा 5 अनार्यों का समूह सम्मिलित था।
→ भरत वंश के पुरोहित वशिष्ठ थे तथा दस राजाओ के पुरोहित विश्वामित्र थे।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

Note: बाद में भरत और पुरु वंश एक हो गए तथा सम्मिलित रूप से कुरु वंश कहलाया।

* ऋग्वैदिक काल में न्यायिक प्रणाली हेतु मध्यमाशी (मध्यस्थता करने वाले) शब्द का प्रयोग हुआ है।

ऋग्वैदिक कालीन धार्मिक जीवन

* ऋग्वैदिक काल के लोग एक सर्वशक्तिमान सत्ता में विश्वास करते थे। इसके साथ ही वे लोग प्रकृति के विभिन्न तत्वों को मानव सदृश मानकर उनकी पूजा करते थे। जिससे हमें ऋग्वेद में अनेक देवताओं का अस्तित्व मिलता है।
* हमें हवाओं पृथ्वी का संदर्भ मिलता है।
* देवताओं की श्रेणियां
  - आकाश के देवता: सूर्य, वरुण, मित्र, ऊषा
  - अंतरिक्ष के देवता: इन्द्र, रुद्र, अश्विन, वायु
  - पृथ्वी: अग्नि, सोम, बृहस्पति, सरस्वती

* सूर्य आकाश के देवता है।
* आकाश को संस्कृत में द्यौ कहते है।
* ऋग्वैदिक काल में सर्वप्रथम सूर्य को पिता तथा पृथ्वी को माता स्वरूप मानकर पूजा की गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* वरुण :

- आकाश के देवता
- इन्हें जल, न्याय, सत्य एवं साक्षी का देवता कहा गया है
- इन्हें प्रकृति का नियमन करने के कारण 'ऋतस्य गोपा' कहा जाता है
- ऋग्वेद में वरुण पर कुल 30 सूक्त हैं। 7वां मण्डल भी इन्ही को समर्पित है।

* इन्द्र :

- ऋग्वैदिक काल के सबसे महत्वपूर्ण देवता
- ऋग्वेद में 250 सूक्त
- अन्य नाम: सोमापा, पुरन्दर, वृत्तहन्ता, पुण्डरक, रथेष्ठ, विजयेन्द्र

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* रूद्र :

- ऋग्वेद में 3 सूक्त
- ऋग्वेद में 'त्र्यंबक' कहा गया है

* अग्नि:

- ऋग्वेद में 200 सूक्त
- ऋग्वैदिककालीन दूसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता
- अन्य नाम: भुवन-चक्षु, जातवेदस, ऋतुगोपा, हिरण्यदन्त

* सोम: ऋग्वेद का 9वां मण्डल समर्पित
* मरूत: आंधी के देवता
* ऊषा, अदिति
  देवियां
* अरण्यानी - जंगल की देवी
* पूषण: पशुओं के देवता (उत्तरवैदिक काल ⇓ शूद्रों के देवता)

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR